

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 5, पुराने नियम की पहचान

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, पुराने नियम की पहचान।

हम परमेश्वर पवित्र आत्मा और उनके सबसे महान उद्धारक कार्य, जो विश्वासियों को मसीह के साथ एकता में लाना है, के बारे में अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

कल, हमने पिछले व्याख्यानों में, आत्मा के व्यक्तित्व, ईश्वरत्व और पुराने तथा नए नियम में उसके कार्यों की खोज की, जिसका समापन यीशु के जीवन में उसके कार्यों के साथ हुआ। अब, जॉन के सुसमाचार में मसीह के साथ वास्तविक एकता की ओर मुड़ने से पहले और फिर बाद में, प्रभु की इच्छा से, पॉल के पत्रों में, हमें पुराने नियम, समकालिक सुसमाचार और प्रेरितों के काम के दृष्टिकोण से मसीह के साथ एकता के तरीके के बारे में बात करने की आवश्यकता है। बाइबल के उन संग्रहों में मसीह के साथ कोई एकता नहीं है, लेकिन कुछ नींव रखी गई हैं।

ईश्वर मसीह के साथ मिलन की नींव रखता है जो हमें इसे बेहतर ढंग से समझने में सक्षम बनाता है। मैं कह सकता हूँ कि मैं इसका श्रेय देना चाहता हूँ; पिछले कुछ वर्षों में मेरे पास अद्भुत शिक्षण सहायक रहे हैं। इन तीनों आधार खंडों पर मुझे काइल कीटिंग से महत्वपूर्ण सहायता मिली है, और मैं इसके लिए उनका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं यह भी कहता हूँ कि यह सामग्री मेरी पुस्तक, आत्मा द्वारा लागू मुक्ति, मसीह के साथ मिलन के अलावा कहीं और मिलना मुश्किल है।

पुराना नियम हर नए नियम की शिक्षा के लिए आधार प्रदान करता है, जिसमें मसीह के साथ एकता भी शामिल है, क्योंकि यह बाइबिल की कहानी के बारे में बहुत कुछ बताता है। मसीह के साथ एकता शून्य से नहीं उभरती है, बल्कि पुराने नियम में पेश की गई अवधारणाओं को भरती है, जो इन अवधारणाओं का पूर्वाभास कराती है, मसीह के साथ पूर्वाभास कराती है। हम जिन प्राथमिक अवधारणाओं का उपयोग करेंगे वे हैं पहचान, समावेश और भागीदारी।

मैं अब उनके बारे में थोड़ा बात करने जा रहा हूँ क्योंकि हम पुराने नियम, समकालिक सुसमाचार और प्रेरितों के काम के लिए उन्हीं तीन अवधारणाओं का उपयोग करने जा रहे हैं, और निश्चित रूप से, हम उन्हीं तीनों को मसीह के साथ वास्तविक एकता में देखेंगे। पहचान, समावेश, भागीदारी। पहचान का अर्थ है परमेश्वर अपनी उपस्थिति के माध्यम से अपने लोगों के साथ पहचान करना और इस तरह, उन्हें एक पहचान देना।

पुराने नियम के लोग परमेश्वर के लोग बन जाते हैं क्योंकि जीवित और सच्चा परमेश्वर उन्हें अपना मानता है और वाचा के द्वारा उनसे संबंध रखता है, और इस तरह, उसकी प्रतिज्ञाएँ और उपस्थिति उन्हें पहचानती हैं, जिससे उन्हें प्राचीन निकट पूर्व में एक विशिष्ट पहचान मिलती है।

तो, सबसे पहले, पहचान। समावेश का अर्थ है परमेश्वर द्वारा अपने लिए एक लोगों का निर्माण करना।

एक आदमी और उसकी पत्नी से, जो बच्चों के जन्म के मामले में लगभग मृत थे, परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से इसहाक और याकूब तथा याकूब के द्वारा इस्राएल के गोत्रों को जन्म दिया। परमेश्वर ने अपने लिए एक जाति बनाई। यह, बेशक, मसीह में विश्वास करने वाले लोगों और मसीह के साथ एकता के माध्यम से उसके साथ एक व्यक्तिगत संबंध में प्रवेश करने का पूर्वाभास देता है, लेकिन साथ ही, वे मसीह के शरीर में, चर्च में शामिल हो जाते हैं।

इस प्रकार मसीह के साथ एकता एक व्यक्तिगत मुक्ति सिद्धांत है, मुक्ति का एक व्यक्तिगत सिद्धांत है, और एक सामुदायिक या कॉर्पोरेट मुक्ति सिद्धांत भी है। यीशु पर विश्वास करते हुए, हम हर उस व्यक्ति से जुड़ जाते हैं जिसने यीशु पर विश्वास किया है। फिर से, यहाँ वे विचार हैं जिनके बारे में हम चिंतित हैं।

पहचान, खास तौर पर परमेश्वर की अपने लोगों के साथ मौजूदगी के ज़रिए। वह उन्हें एक ऐसी पहचान देता है जो उनके पास पहले नहीं थी, और जो उन्हें हमेशा के लिए बदल देती है। रोमियों 11, परमेश्वर के उपहार और बुलाहट अपरिवर्तनीय हैं।

मैं समझता हूँ कि जातीय इस्राएल, अब्राहम और सारा के पुत्रों और वंशजों के लिए अभी भी एक भविष्य है। समावेश। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा से अपने लिए एक लोग बनाए, और मिस्र से मुक्ति में, उसने उन्हें सामूहिक रूप से अपना लोग बनाया।

इसलिए, वे एक ऐसे लोगों के रूप में उसके हैं, जिस तरह से प्राचीन निकट पूर्व में कोई अन्य लोग नहीं थे। पहचान, समावेश और भागीदारी का मतलब है परमेश्वर के लोगों का परमेश्वर की कहानी में हिस्सा लेना और यहाँ तक कि परमेश्वर के जीवन में भी, उनके अपने अनुभवों के आधार पर, उनका ईमानदारी से अनुसरण करना। बेशक, इस्राएल ने हमेशा परमेश्वर का ईमानदारी से अनुसरण नहीं किया, और फिर भी वह उनके प्रति वफादार है, और वे उसकी कहानी में भाग लेते हैं क्योंकि वह उन्हें अपने विशिष्ट लोगों के रूप में दावा करता है, एक राष्ट्र के रूप में जिसे दुनिया के लिए एक प्रकाश माना जाता है।

हां, वे इसमें काफी हद तक असफल रहे। फिर भी, उन्होंने खुद परमेश्वर की कथा में भाग लिया - पुराने नियम में मसीह के साथ एकता की नींव।

सबसे पहले, पहचान, और मैं इसे फिर से कहूँगा: मैं उन्हीं तीन बिंदुओं का उपयोग करने जा रहा हूँ। पहचान, समावेश, भागीदारी। पुराने नियम, सिनॉटिक्स और प्रेरितों के काम के लिए।

पहचान, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचागत उपस्थिति। शुरू से ही, परमेश्वर अपने लोगों के साथ पहचान रखता है। वह उन्हें अपनी छवि में बनाता है, उत्पत्ति 1:27, और पाप के बाद वह अपराध-बोध से ग्रस्त आदम से पहला सवाल पूछता है, तुम कहाँ हो? उत्पत्ति 3:9 परमेश्वर की निरंतर इच्छा को दर्शाता है, उनके लोगों के पाप और विद्रोह के बावजूद उनके साथ उपस्थित रहने की उनकी निरंतर इच्छा।

परमेश्वर ने अब्राहम को चुनकर, जो अब्राहम बन जाता है, और उत्पत्ति 12:15, और 17 में उसके और उसके वंशजों के साथ अपनी वाचा स्थापित करके खुद को एक विशेष परिवार के साथ पहचाना। पुराने नियम की पूरी कहानी में, परमेश्वर अपने लोगों के साथ मौजूद रहकर उनकी पहचान करता है। इस प्रकार उसकी वाचागत उपस्थिति उन्हें पृथ्वी पर सभी लोगों में से एक अनोखी पहचान देती है।

यह विषय तब स्पष्ट हो जाता है जब कहानी परमेश्वर द्वारा इस्राएल को अपना विशेष लोग बनाने की ओर बढ़ती है। बेशक, हम इस बात पर आगे बढ़ रहे हैं कि यीशु में विश्वास करने वालों की पहचान मसीह में विश्वास करने वालों के रूप में होती है। यह एक अद्भुत सत्य है।

यह पौलुस के पत्रों में व्याप्त है। यह उसके सभी परिचयों में है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, कभी-कभी हमें आश्चर्यचकित करता है। इसलिए, 1 कुरिन्थियों 1, पद 2 में, पौलुस कुरिन्थ में परमेश्वर की कलीसिया को लिखता है, जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं, और उन सभी के साथ पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं जो हर जगह हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम को पुकारते हैं, जो उनके और हमारे दोनों प्रभु हैं।

मैं हमेशा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, 1 कुरिन्थियों 1:4, परमेश्वर के अनुग्रह के कारण जो तुम्हें मसीह यीशु में दिया गया, और वह आगे बढ़ता है। संघर्षरत कुरिन्थियन मण्डली में कुछ असंरक्षित सदस्य थे। 1 कुरिन्थियों 5, तथाकथित भाई को बाहर निकालो, पॉल कहते हैं, क्योंकि वह एक ऐसी परिस्थिति से नाराज है जिसके बारे में पॉल कहते हैं कि यह मूर्तिपूजकों के बीच अज्ञात है।

अपने साथ रहने वाले पुरुष को अपनी सौतेली माँ बनना चाहिए, न कि अपनी प्राकृतिक माँ, अपनी सौतेली माँ के साथ वैसे ही रहना चाहिए जैसे एक पुरुष अपनी पत्नी के साथ रहता है। उसे अपने ही हित के लिए, परमेश्वर की महिमा के लिए, और अपने ही हित के लिए बाहर निकालो, ताकि वह पश्चाताप कर सके। हमें लगता है कि शायद उसने पश्चाताप किया हो।

अगर वह 2 कुरिन्थियों में वर्णित व्यक्ति है, तो पॉल कहता है, ठीक है, उसने पश्चाताप किया है। उसके साथ नरमी से पेश आओ, थोड़ा पीछे हटो, उसे स्वीकार करो। अगर यह वही व्यक्ति है, तो उस तरह की कहानी कुछ इस तरह की है। लेकिन, किसी भी मामले में, नए नियम में विश्वासियों की पहचान अलग-अलग तरीकों से की जाती है।

सबसे आम तरीका, शायद वैसे भी शीर्षक के रूप में, भाइयों के रूप में है, और हम निश्चित रूप से भाइयों और बहनों को कह सकते हैं, लेकिन वे सभी जगह उन लोगों के रूप में पहचाने जाते हैं जो मसीह में हैं, मसीह यीशु में हैं, और इसी तरह। इसकी जड़ें प्रेरितों के काम, मत्ती, मरकुस और लूका और पुराने नियम के इतिहास में वापस जाती हैं, जब परमेश्वर अपने वाचा के लोगों को एक पहचान देता है, विशेष रूप से उनके परमेश्वर होने के योग्य समझकर, उन्हें अपने लोगों के रूप में दावा करके, और उनके बीच निवास करके। निर्गमन 25:8, और 9। प्रभु निर्देश दे रहे हैं।

दरअसल, वह एक निवासस्थान बनाने के लिए दान मांग रहा है, खास तौर पर सबसे पवित्र स्थान, पवित्र स्थान और सबसे पवित्र स्थान। निर्गमन 25:8, और 9। और वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं, ताकि मैं उनके बीच में निवास कर सकूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैं तुम्हें निवासस्थान और उसके सभी सामान के नमूने के बारे में बताता हूँ। तो, तुम इसे बनाओ।

मैं समझता हूँ कि देश भर में अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग टेबर्नकल मॉडल हैं। दक्षिण में एक ऐसा मॉडल है जिसे मैंने नहीं देखा है। शायद यह टेनेसी में हो।

हो सकता है कि मैं अपना राज्य गलत बता रहा हूँ, लेकिन मैं न्यू जर्सी, पेनसिल्वेनिया क्षेत्र, पूर्व से हूँ, और मैंने मेनोनाइट्स द्वारा निर्मित तम्बू का दौरा किया है, जिसके बारे में वे अद्भुत पर्यटन प्रदान करते हैं, और मैं बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने कहा कि सब कुछ बाइबिल के विनिर्देशों के अनुसार बनाया गया है, सिवाय उन जगहों के जहाँ बाइबिल के विनिर्देश नहीं हैं, और फिर वे आपको यह भी बताते हैं कि क्या सुंदर है। और आपको इस पर विश्वास करना चाहिए, वे मेनोनाइट महिलाएँ कढ़ाई कर सकती हैं।

तो, घूँघट और अन्य चीजें सिर्फ कला के काम हैं, ठीक है? कला के काम, और उच्च पुजारी की छाती की पट्टियाँ, और पूरा व्यवसाय। लेकिन यहाँ जो आपको चौंकाता है वह यह है। वे कहते हैं, नंबर एक, इस तम्बू का अस्तित्व, और आप वहाँ खड़े हैं, और यह पैमाने पर है।

एक चीज़ जो आपके पास नहीं है, वह है बाहरी बाड़। उन्होंने हेज का इस्तेमाल किया, या उन्होंने उस समय, 20 साल पहले किया था, लेकिन यह सही ऊंचाई पर है। नंबर एक, यह भगवान की अपने लोगों के साथ मौजूद रहने की इच्छा को दर्शाता है।

नंबर दो, बाड़, पूर्व से एकमात्र प्रवेश द्वार, और बलिदान की सभी आवश्यकताएँ और इसी तरह, सबसे पहले, तम्बू का अस्तित्व कहता है, आओ, और फिर अन्य सभी चीजें कहती हैं, नहीं, रुको। इसका मतलब है, वे केवल बलिदान के माध्यम से, भगवान के नियुक्त तरीके से, उनके नियुक्त पुजारियों के माध्यम से, भगवान के पैटर्न का पालन करते हुए, और जैसा कि यहाँ कहा गया है, तम्बू के पैटर्न के अनुसार ही भगवान के पास पहुँच सकते हैं। हिब्रू उस बारे में बात करता है, और कहता है कि भगवान स्वर्गीय तम्बू के बारे में हमें बताने के लिए सांसारिक तम्बू का उपयोग करता है।

इसका अर्थ है ईश्वर और स्वर्ग की उपस्थिति। इसलिए आमंत्रण और बहिष्कार के बीच का वह विरोधाभास ईश्वर द्वारा कृपापूर्वक इस्राएल को बलिदान देने वाले पंथ द्वारा दूर हो जाता है। ओह, आस-पास के लोगों के पास मंदिरों, पुजारियों और वेदियों में बलिदान थे, लेकिन उनका कोई फायदा नहीं हुआ।

इब्रानियों 9:15 कहता है, आखिरकार, यह यीशु के अद्वितीय बलिदान के कारण है जो भविष्य में होने वाला है, पुराने नियम के दृष्टिकोण से, कि पुराने नियम के बलिदानों का लाभ हुआ, और विश्वास करने वाले इस्राएलियों ने आकर बलिदान किए जाने वाले जानवर पर अपने पापों को स्वीकार किया, उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा क्षमा कर दिया गया। निर्गमन 25:8 और 9,

परमेश्वर ने उन्हें अपना कानून दिया, और फिर उसने आज्ञा दी, वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं, ताकि मैं उनके बीच निवास कर सकूँ। निर्गमन 25:8।

परमेश्वर लोगों को एक तम्बू बनाने की आज्ञा देता है, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति उनके बीच में निवास कर सके। तम्बू का यही उद्देश्य है। तम्बू का उद्देश्य परमेश्वर का अपने लोगों के बीच में निवास स्थान होना है।

यह परमेश्वर की अपने लोगों के साथ उपस्थित होकर उनके साथ पहचान बनाने की इच्छा का एक ठोस प्रदर्शन है। वह उनके साथ पहचान बनाता है। मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।

उत्पत्ति 17. अब्राहम, मैं तेरा और तेरे वंश का परमेश्वर ठहरूँगा। और, बेशक, वाचा का दूसरा पहलू यह है कि परमेश्वर अब्राहम पर दावा करता है।

जब अब्राहम इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए तैयार होता है, तो परमेश्वर कहता है, अब मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे डरते हो। परमेश्वर का अनुग्रह ही सब कुछ है। उद्धार एकेश्वरवाद है, केवल परमेश्वर का कार्य है।

वाचा एकात्मक है, लेकिन जैसे ही यह लोगों को पकड़ती है, यह तुरंत ही द्विपक्षीय हो जाती है। परमेश्वर के लोगों की परमेश्वर के प्रति अधिक जिम्मेदारी है, उन लोगों की तुलना में जो परमेश्वर को नहीं जानते। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा की शुरुआत की, जब अब्राहम बेहोश था, तब वह जानवरों के टुकड़ों के बीच से चला।

आप एकेश्वरवाद को इससे बेहतर कैसे दिखा सकते हैं? परमेश्वर संप्रभुतापूर्वक वाचा को काटता है, वस्तुतः। लेकिन, इसलिए, यह सब उसका है। यह एकेश्वरवादी है।

लेकिन फिर, धमाका, अब्राहम उसका अपना नहीं है। परमेश्वर उसके जीवन, परिवार और भविष्य का दावा करता है। निर्गमन 33.

मूसा, निश्चित रूप से, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, पुराने नियम का एक मध्यस्थ है, शायद पुराने नियम की वाचा का मध्यस्थ। बेशक, ये वाचा के मध्यस्थ, जिनमें आदम, नूह, मूसा और दाऊद शामिल हैं, दिमाग में आते हैं; वे सभी एक नई वाचा के मध्यस्थ की ओर इशारा करते हैं, यानी यीशु। लेकिन मूसा मुझे हैरान करता है।

लोग बहुत विद्रोही हैं। भगवान कहते हैं, रास्ते से हट जाओ। मैं इन लोगों को नष्ट कर दूँगा। हम इस्राएलियों से बहुत थक चुके हैं।

मोसेसाइट कहना चाहूँगा। मूसा, जो धरती पर सबसे नम्र व्यक्ति है, ईश्वर की उपस्थिति में खड़ा होकर असहमति जताता है।

नहीं, प्रभु, कृपया अपने नाम की खातिर ऐसा मत करो। अविश्वसनीय। यहाँ निर्गमन 33 में, मूसा ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से अपनी महिमा दिखाने के लिए कहने का साहस किया, जो निर्गमन 34 में ईश्वरीय नाम के परिभाषित रहस्योद्घाटन की ओर ले जाता है।

निर्गमन 33. परमेश्वर की पहचान उसके लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। सोने के बछड़े की घटना के बाद, इस्राएल पर शर्म आती है, हारून पर शर्म आती है।

मैंने इसे आग में फेंका, और यह बाहर आ गया। मैंने धातु फेंकी। ओह, आरोन, आरोन।

दोष दूसरे पर मढ़ने की शुरुआत ईडन गार्डन से होती है। और एडम ने कहा, हे प्रभु, आप सही कह रहे हैं। मैं कबूल करता हूँ, मैं पश्चाताप करता हूँ।

मैंने अपनी पत्नी को गुमराह किया है। कृपया मुझे दोष दें, उसे नहीं। नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा।

वह अपनी पत्नी को और परोक्ष रूप से भगवान को दोषी ठहराता है, जिसने उसे उसे दिया। दोष दूसरे पर मढ़ना शुरू हो गया। और एरॉन की बात तो बहुत ही घटिया है।

मैंने गहने आग में फेंके, और यह बछड़ा बाहर आ गया। ओह, हारून, हारून, हारून। हम हारून की तरह ही हैं, है न? पुरुष प्रधानता के बारे में मेरा धर्मशास्त्र कहता है कि जब कोई भी पक्ष आगे नहीं बढ़ता है, तो यह बीच में होता है। यह पहाड़ और माता-पिता का झगड़ा है।

पति को खुद को विनम्र बनाना चाहिए और अपनी पत्नी से माफ़ी मांगनी चाहिए। मेरे लिए नेतृत्व का यही मतलब है। वैसे भी, सोने के बछड़े वाली घटना के बाद, भगवान मूसा से कहते हैं कि लोग उनकी मौजूदगी के बिना वादा किए गए देश में जा सकते हैं।

ओह! दूध और शहद की धारा बहने वाले देश में जाओ। निर्गमन 33, लेकिन मैं तुम्हारे बीच नहीं जाऊंगा।

ऐसा न हो कि मैं तुम्हें मार्ग में ही भस्म कर डालूँ, क्योंकि तुम हठीले लोग हो। हे मेरी बात। उस मनुष्य के पास जाओ जो दूध और मधु से बहता हो, परन्तु मैं तुम्हारे बीच में न चलूंगा।

कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें रास्ते में ही खा जाऊँ, क्योंकि तुम एक हठीले लोग हो। हठीले विद्रोह और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की कैसी तस्वीर है, हठीली गर्दन। आह, सचमुच।

परमेश्वर के लोग कैसी प्रतिक्रिया करते हैं? पद चार। जब लोगों ने यह विनाशकारी शब्द सुना, तो मैं तुम्हारे साथ अपनी उपस्थिति में ऊपर नहीं जा रहा था। मैं अब तुम विद्रोहियों के साथ अपनी पहचान नहीं बनाऊंगा।

वे विलाप करते रहे, परन्तु किसी ने अपने गहने नहीं पहने। क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, इस्राएल के लोगों से कहो, तुम हठीले लोग हो। यदि मैं एक क्षण के लिए भी तुम्हारे साथ चलूँ तो मैं तुम्हें भस्म कर दूंगा।

अब, अपने गहने उतार दो ताकि मैं जान सकूँ कि तुम्हारे साथ क्या करना है। इसलिए, इस्राएल के लोगों ने होरेब पर्वत से आगे अपने गहने उतार दिए। तब मूसा ने लोगों की ओर से यहोवा के सामने विनती की।

निर्गमन 33:15 और 16. मूसा ने यहोवा से कहा, "उसकी धृष्टता ने मुझे चकित कर दिया है। यदि तू हमारे साथ न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा।"

क्योंकि यह कैसे जाना जाए कि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है? मैं और आपके लोग, क्या यह आपके साथ चलने में नहीं है कि हम अलग-अलग हों? मैं और आपके लोग पृथ्वी के हर दूसरे व्यक्ति से अलग हैं। बस यही है। इन लोगों की पहचान जीवित परमेश्वर की उपस्थिति से जुड़ी हुई है जिसने उनके साथ वाचा बाँधी है।

उनके भयंकर विद्रोह और मूर्तिपूजा के बावजूद, मूसा को पहाड़ पर मूर्तिपूजा निषिद्ध करने वाली आज्ञाएँ मिल रही थीं। वे माउंट सिनाई के तल पर मूर्तिपूजा और अन्य पापों में लिप्त हैं। मूसा की मध्यस्थता का आधार यही है।

लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति की आवश्यकता है क्योंकि यह उसकी उपस्थिति ही है जो उन्हें वह बनाती है जो वे हैं। परमेश्वर के विशिष्ट लोगों के रूप में उनकी पहचान उनके साथ प्रभु की उपस्थिति पर आधारित है। परमेश्वर अपने लोगों के साथ पहचान बनाने, उनके साथ खुद को एकजुट करने का प्राथमिक तरीका, हम कह सकते हैं, मसीह के साथ एकता के नए नियम के सिद्धांत की प्रत्याशा करते हुए, उनके साथ मौजूद रहने की उनकी प्रतिबद्धता के द्वारा है।

लैव्यव्यवस्था 26. लैव्यव्यवस्था 26 एक बड़ी समस्या को उठाता है। कैसे एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर ऐसे पापी लोगों के बीच में रह सकता है? लैव्यव्यवस्था 26:11 से 13.

मैं माफ़ी चाहता हूँ। ओह, यह मेरी समस्या है। यह लैव्यव्यवस्था है, संख्या नहीं।

संख्या 26 से काम नहीं चल रहा था; यहाँ यह काम नहीं आ रहा था। लैव्यव्यवस्था 26. मैं अपनी उलझन के लिए क्षमा चाहता हूँ।

11 से 13. मैं तुम्हारे बीच वास करूँगा, और मेरा मन तुम से घृणा न करेगा, और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूँगा, और तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल लाया कि तुम उनके दास न बनो।

और मैंने तुम्हारे जूए के बंधन तोड़ दिए हैं और तुम्हें सीधा चलने लायक बनाया है। एक पवित्र परमेश्वर ऐसे पापी लोगों के बीच कैसे मौजूद हो सकता है? नंबर एक, परमेश्वर का चरित्र पवित्र और न्यायी दोनों है, साथ ही अनुग्रहकारी और प्रेमपूर्ण भी है। हम परमेश्वर के चरित्र के पूर्ण बाइबिलीय रहस्योद्घाटन के लिए आभारी हैं।

हम, ईश्वर को समझने की कोशिश करने के लिए, एक-एक करके उसके गुणों या खूबियों के बारे में बात करते हैं, लेकिन हम यह गलत धारणा दे सकते हैं कि उसके, मैं बस 18 गुण कहूंगा, मुझे यकीन नहीं है कि कितने हैं, गिनने के अलग-अलग तरीके हैं, शायद 16 से 20 के बीच, एक पाई के 18 टुकड़े हैं, और ईश्वर 1/18वां पवित्र और 1/18वां प्रेमपूर्ण और 1/18वां क्या है? नहीं, नहीं। ईश्वर सभी एक साथ है, सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान, प्रेमपूर्ण, दयालु, न्यायी, पवित्र, हर जगह मौजूद, इत्यादि। और उसकी संपूर्ण तस्वीर, जैसा कि प्यूरिटन इसे कहते हैं, पूर्णता इतनी शानदार है क्योंकि अगर ईश्वर पवित्र और न्यायी होता, और धैर्यवान, दयालु और प्रेमपूर्ण नहीं होता तो जीवन कैसा होता? हम उसके सामने झुक जाते।

अगर वह प्रेमपूर्ण, दयालु और वफ़ादार होता, और शक्तिशाली नहीं होता, हमारी दुर्दशा के बारे में कुछ भी करने में सक्षम नहीं होता, तो जीवन कैसा होता? वैसे भी, उसके गुण उसके व्यक्तित्व में समाहित हैं, और वह सभी एक साथ है, उसके सभी गुण एक साथ हैं, और वह अपने अस्तित्व, बुद्धि, शक्ति, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य में अनंत, शाश्वत और अपरिवर्तनीय है, जैसा कि वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज़्म कहता है, और हम उसे आंशिक रूप से समझते हैं, और हम उसकी पूजा करते हैं, जैसा कि सेंट ऑगस्टीन ने कहा, तब भी जब हम पूरी तरह से नहीं समझते हैं। यह अच्छा है क्योंकि हम कभी भी पूरी तरह से नहीं समझ पाएंगे। अनंत काल तक, निर्माता-सृजन भेद वैध है।

ईश्वर हमेशा अनंत और शाश्वत रहेगा। हम हमेशा उसके प्राणी रहेंगे, और यही एक ऐसी चीज़ है जो स्वर्ग को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से बेहतर, शानदार और शाश्वत रूप से दिलचस्प बनाएगी। हम ईश्वर से कभी ऊबेंगे नहीं।

हम कभी भी उसके अस्तित्व की गहराई को नहीं समझ पाएंगे या उससे ऊब नहीं पाएंगे। उसका चरित्र पवित्र और न्यायपूर्ण है, आमीन, और अनुग्रहपूर्ण और प्रेमपूर्ण है, आमीन। क्या हम खुश नहीं हैं? परमेश्वर अपने वाचा संबंधों के प्रति प्रतिबद्ध है।

इस अंश की तीनों छवियाँ, अपने लोगों के साथ रहना, अपने लोगों के बीच चलना, और उनका परमेश्वर होना, संबंधवाद की बात करती हैं। बाइबल परमेश्वर को उसके अदृश्य, शाश्वत सार में नहीं बल्कि एक ऐसे परमेश्वर के रूप में दर्शाती है जो अपने लोगों के साथ वाचा में प्रवेश करता है, कम से कम उत्पत्ति 12 से, पहले से ही मोज़ेक वाचा, और यहाँ तक कि बगीचे में सृष्टि की वाचा या कार्यों की वाचा भी है। अच्छे लोगों के पास इस पर अलग-अलग विचार हैं, लेकिन निश्चित रूप से सृष्टि से एक वाचा चल रही है।

इसलिए हम परमेश्वर को उसकी वाचा संबंधी रहस्योद्घाटन के आधार पर जानते हैं जो हमें उसके लोगों के साथ वाचा संबंधी संबंधों के बारे में बताता है। वह पवित्र और न्यायी, प्रेमपूर्ण और दयालु दोनों है। वह अपने लोगों के साथ एक रिश्ते में प्रतिबद्ध है, और लैव्यव्यवस्था 26:11 से 13 की छवियाँ, अपने लोगों के साथ रहना, उनके बीच चलना, उनका परमेश्वर होना, इस बारे में बात करती हैं।

लैव्यव्यवस्था यह स्थापित करती है कि परमेश्वर की अपने लोगों के साथ उपस्थिति एकता का एक रूप है, जैसा कि हम वास्तव में 2 कुरिन्थियों 6:16 में पॉल से देखेंगे। मैं इसे पढ़े बिना नहीं रह सकता। जब पॉल मसीह में चर्च के परमेश्वर के साथ एकता के बारे में बात करता है, तो पॉल ने, आपने अनुमान लगाया होगा, उस अंश को उद्धृत किया है जिसे हमने अभी पढ़ा है।

2 कुरिन्थियों 6 में पौलुस अविश्वास के साथ आध्यात्मिक एकता का विरोध कर रहा है। कुरिन्थ के लोग मूर्तिपूजक मंदिरों में जाना जारी रखते हैं। नहीं, पौलुस कहता है।

सबसे पहले, 1 कुरिन्थियों 6 में बुतपरस्त वेश्यावृत्ति से कोई लेना-देना नहीं है। तुम मुझे बदनाम करते हो, पॉल कहते हैं। क्या तुम नहीं समझते? मसीह के साथ एकता स्थायी है, और जब तुम वेश्याओं के रूप में अपने सदस्यों के साथ जुड़ते हो, तो तुम एक वेश्या के रूप में मसीह के साथ जुड़ रहे हो। भयानक! इतना ही नहीं, बल्कि 1 कुरिन्थियों 10 में, इस तथ्य की बात करते हुए कि प्रभु का भोज मसीह के शरीर और रक्त में भागीदारी है, वह यह कहकर इसे स्पष्ट करता है कि कुरिन्थियों, फिर से, मण्डली में बड़े पैमाने पर मूर्ख पुरुष, मूर्तिपूजक मंदिरों में जा रहे हैं और किसी न किसी रूप में मूर्तियों के साथ जुड़े हुए हैं।

नहीं, पॉल कहते हैं। इन चीजों के पीछे शैतान हैं। यह अंधकारमय पक्ष है।

उससे दूर रहें। बेशक, मूर्तियाँ कुछ भी नहीं हैं, और संभवतः कुरिन्थ में सभी भोजन किसी मूर्ति को समर्पित थे, लेकिन मंदिरों से दूर रहें। वे अधर्म और अंधकार का केंद्र हैं, और वहाँ भगवान के लिए नहीं, बल्कि राक्षसों के लिए बलिदान किए जाते हैं।

मैं नहीं चाहता कि तुम प्रभु के प्याले और दुष्टात्माओं के प्याले में से कुछ खाओ, वह कहता है, प्रभु के भोज के संस्कार में मसीह के शरीर और रक्त में भाग लेने वाले विश्वासियों की धारणा को जबरदस्त महत्व देते हुए। सात बार कहने के बाद, अविश्वासियों के साथ असमान बंधन में न बंधें। संदर्भ विवाह नहीं है।

क्या विवाह एक धार्मिक मिलन है? हाँ। क्या यह अंश विवाह पर लागू हो सकता है? ज़रूर। लेकिन क्या यह विवाह के बारे में बात कर रहा है? नहीं।

1 कुरिन्थियों 7 में विवाह के बारे में बात की गई है। सात बार वह कुछ ऐसा ही कहता है। परमेश्वर के मंदिर का मूर्तियों से क्या सम्बन्ध? फिर वह कहता है, क्योंकि हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा है।

मैं उनके बीच निवास करूँगा और उनके बीच चलूँगा। मैं उनका परमेश्वर बनूँगा। वे मेरे लोग होंगे।

और फिर वह उनसे कहता है कि वे बाहर आँ और आध्यात्मिक अविश्वास के साथ एकता से खुद को अलग कर लें। और अगर वे ऐसा करते हैं, तो मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, और तुम मेरे लिए बेटे और बेटियाँ होगे, सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं। यह उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें वास्तव में बेटियों का उल्लेख है।

प्रचारक सही मायने में पुत्रत्व के बारे में बात करते हैं। और, बेशक, इसका संबंध यीशु के अद्वितीय पुत्र होने और हमारे द्वारा विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उसका दर्जा प्राप्त करने से है। और इसलिए पुरुषों और महिलाओं को पुत्र कहा जाता है।

लेकिन यह सुंदर है। इसमें वास्तव में 2 कुरिन्थियों 6 में दी गई अभिव्यक्ति का उपयोग किया गया है। मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, और तुम मेरे लिए बेटे और बेटियाँ बनोगे। यह सुंदर है।

मुझे यह पसंद है। लैव्यव्यवस्था स्थापित करती है कि परमेश्वर की अपने लोगों के साथ उपस्थिति परमेश्वर के साथ एकता का एक रूप है जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 6.16 में पौलुस के उद्धरणों से देखते हैं। तर्क यह है कि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ अपनी उपस्थिति के द्वारा खुद को उनके साथ एक कर लिया है।

यशायाह 7, 10 से 14. मैं इन बातों पर इसलिए मेहनत कर रहा हूँ क्योंकि ये बहुत कम लोगों को पता हैं। नए नियम के संदेश को समझने के लिए हमारे लिए दोनों नियमों को पढ़ना भी अच्छा है।

यह पुरानी बातों को छोड़कर समझ से परे है। यशायाह 7. राजा आहाज दिखावा करता है कि वह आध्यात्मिक है, लेकिन परमेश्वर बेहतर जानता है। ओह, मेरा वचन।

10 से 14. फिर यहोवा ने आहाज से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग।

अधोलोक जितना गहरा हो या आकाश जितना ऊँचा। लेकिन आहाज कहता है कि मैं नहीं पूछूँगा। मैं प्रभु की परीक्षा नहीं लूँगा।

ऐसा करके वह परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध जा रहा है। और उसने उससे कहा, " तो हे दाऊद के घराने, सुन , परमेश्वर की वाणी है। क्या मनुष्यों को थका देना तुम्हारे लिए इतना कम है कि तुम मेरे परमेश्वर को भी थका दो? इसलिए, प्रभु स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देगा।"

देखो, कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। यशायाह 7 इस बात की झलक देता है कि बाइबल की कहानी के खुलने में परमेश्वर की उपस्थिति का विचार कैसे सामने आएगा। यशायाह राजा आहाज के लिए भविष्यवाणी करता है, जो एक उद्धारकर्ता की तलाश में है।

यहाँ मुख्य बात यह है कि प्रभु के अलावा, वह राजनीतिक गठबंधनों पर निर्भर रहने वाला है। और परमेश्वर उसे बताता है कि इस्राएल के लिए अंतिम उद्धार स्वयं प्रभु से आएगा।

श्लोक 14, जो परमेश्वर की उपस्थिति के संकेत के रूप में दाऊद के घराने से एक पुत्र प्रदान करेगा। उसे इम्मानुएल या परमेश्वर हमारे साथ कहा जाएगा। आप इसका अनुवाद इस प्रकार कर सकते हैं: परमेश्वर हमारे साथ है।

मत्ती 1:22, 23 में दिखाया गया है कि ये आवाज़ें यीशु के परमेश्वर के मसीहा के रूप में आगमन की ओर इशारा करती हैं। मैं वास्तव में नए नियम के उद्घरणों को दिखाने के लिए समय निकालना चाहूँगा, फिर से, नियमों को एक साथ जोड़ने के लिए जैसा कि प्रभु ने स्वयं किया है। यूसुफ़ व्याकुल था।

वह समझ नहीं पाया। क्या मैरी ने उसके साथ बेवफ़ाई की थी? यह बात समझ में ही नहीं आई। वह गर्भवती थी।

और फिर एक सपने में, प्रभु ने सच्चाई का खुलासा किया। उसके लिए, यह मानवीय कार्य नहीं था, बल्कि ईश्वरीय कार्य था। मत्ती 1:22.

20 हे यूसुफ़, दाऊद की सन्तान, तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर। क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। लूका की तुलना में मत्ती का लेख अधिक संक्षिप्त है।

उसने बस इसे इस तरह से संक्षेप में बताया। वह एक बेटे को जन्म देगी। तुम उसका नाम यीशु रखोगे, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

यह सब इसलिए हुआ ताकि जो प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो। देखो, कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। इस प्रकार यशायाह 7 इस्राएल के मसीहा के रूप में यीशु के आगमन की ओर संकेत करता है।

एक और पाठ। यहजेकेल 37. मैंने जानबूझकर पुराने नियम में इन सच्चाइयों की गवाही की व्यापकता को दिखाने के लिए इन्हें फैलाया है, ये मूलभूत सत्य जो व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से मसीह के साथ एकता में परमेश्वर की पहचान के लोगों में अपनी पूर्णता तक पहुंचेंगे।

यहजेकेल 37. पुराने नियम की वाचा के कई मध्यस्थों में से एक, दाऊद महान दाऊद, मसीहा का पूर्वाभास कराता है, जो हमेशा के लिए देश में इस्राएल का चरवाहा राजा होगा। वह उनके साथ शांति की एक शाश्वत वाचा बाँधेगा, और वह, पवित्र करनेवाला, उनके और उनके वंशजों के बीच अपना पवित्रस्थान रखेगा।

वाचा के वादों की पूर्ति में, परमेश्वर उनके साथ वास करेगा। वह उनका परमेश्वर होगा, और वे उसके लोग होंगे। यहजेकेल 37, 24 से शुरू होता है।

मेरा सेवक दाऊद उनका राजा होगा, और उन सबका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों का पालन करने में चौकसी करेंगे। वे उस देश में रहेंगे जिसे मैं अपने सेवक याकूब को देता हूँ, जहाँ तुम्हारे पूर्वज रहते थे।

वे और उनके बच्चे और उनके पोते-पोतियाँ हमेशा के लिए वहाँ रहेंगे। और मेरा सेवक दाऊद हमेशा के लिए उनका राजकुमार रहेगा। मैं उनके साथ शांति की वाचा बाँधूँगा।

यह उनके साथ एक सदा की वाचा होगी, और मैं उन्हें उनके देश में बसाऊँगा और उनकी संख्या बढ़ाऊँगा और उनके बीच में अपना पवित्र स्थान सदा के लिए स्थापित करूँगा। मेरा निवास उनके साथ रहेगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। तब जातियाँ जान लेंगी कि मैं ही वह यहोवा हूँ जो इस्राएल को पवित्र करता है, जब मेरा पवित्र स्थान उनके बीच सदा के लिए बना रहेगा।

हालाँकि अच्छे लोग इस पर बहस करते हैं, लेकिन मैं इसे अंततः आध्यात्मिक इस्राएल, परमेश्वर के लोगों द्वारा उसकी आज्ञा मानने, और उसके मसीह राजा, नई पृथ्वी में हमेशा के लिए सच्चे मध्यस्थ के बारे में एक भविष्यवाणी के रूप में समझता हूँ। परमेश्वर उन्हें शांति देगा, उन्हें पवित्र करेगा, और अपनी पिछली वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्ण पूर्ति में उनके बीच निवास करेगा। इस प्रकार, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति भी युगांतिक है, जो एक ऐसे भविष्य की ओर इशारा करती है जब परमेश्वर की अपने लोगों के साथ उपस्थिति हमेशा के लिए स्थापित हो जाती है।

स्वर्ग या अंतिम उद्धार की तस्वीरों में से एक है ईश्वर की उपस्थिति। हम इसे ईडन गार्डन में, पतन के बाद के शब्दों में देखते हैं। मूसा के आदम और हव्वा लिखते हैं कि मैंने बगीचे में प्रभु ईश्वर के चलने की आवाज़ सुनी।

वे उस आवाज़ के आदी थे, लेकिन इसके बाद उन्होंने जो किया, उसके वे आदी नहीं थे। उन्होंने खुद को परमेश्वर से छिपा लिया। कितनी मूर्खता है।

वे परमेश्वर की संगति की आवाज़ को जानते थे, लेकिन उन्होंने खुद को उससे छिपा लिया। पुराने नियम के इतिहास का अध्ययन परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकाश में आसानी से किया जा सकता है। रात में आग का खंभा था, दिन में बादल का खंभा था, जो इस्राएल के साथ चल रहा था, जब उन्हें रुकना था तो रुक गया, जब उन्हें जाना था तो चला गया।

दृश्यमान, अलौकिक अभिव्यक्तियाँ जैसे कि स्तंभ, एक बादल के साथ, एक आग के साथ। आप इसे ईश्वर के लोगों के लिए एक दिव्य रात्रि प्रकाश मान सकते हैं। फिर भी, उन्होंने विद्रोह किया और प्रभु के विरुद्ध पाप किया और 1 कुरिन्थियों 10 के पापों में लिप्त हो गए, जिससे बचने के लिए पॉल ने नए नियम के ईसाइयों को चेतावनी दी।

बड़बड़ाना, यौन अनैतिकता, मूर्तिपूजा, और कुछ और। यह मुझे एक तरफ़ से आगे बढ़ना सिखाएगा। परीक्षण करने वाला ईश्वर।

हाँ, परमेश्वर को परखना भी एक और बात है। पौलुस कहता है कि ये बातें हमारे लाभ के लिए लिखी गई हैं, और परमेश्वर के अलावा किसी और प्रलोभन ने तुम्हें नहीं लिया है। वह कहता है, सबसे पहले सावधान रहो।

वह कहते हैं कि कोई भी प्रलोभन अद्वितीय नहीं होता, लेकिन परमेश्वर आपको बचने का रास्ता प्रदान करेगा जिसे आप सहन कर सकते हैं। अपने पुराने नियम, परमेश्वर के पुराने नियम के

लोगों के मार्ग पर, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में मत चलो। तीन चित्र, तीन रूपांकन, पहचान, समावेश, और, तीसरा, भागीदारी।

पहले का निष्कर्ष, अपनी पहचान वाली उपस्थिति के द्वारा अपने लोगों के साथ खुद को एकजुट करने की परमेश्वर की प्रतिबद्धता अंततः उनके साथ उनकी पहचान में पूरी होती है, जिसमें से एक बनकर। जैसे ही परमेश्वर का शाश्वत पुत्र अपने लिए देह धारण करता है, अर्थात्, एक मानव शरीर और आत्मा, परमेश्वर की अपने लोगों के साथ एकता में पहचान करने की अंतिम प्रतिबद्धता उनके साथ अपने पुत्र को मानव शरीर की समानता में भेजना है, फिलिप्पियों 2, 7। वह जो परमेश्वर के रूप में विद्यमान था, उसने एक सेवक का रूप धारण किया। मनुष्य के रूप में पाया जाने पर, उसने मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन किया, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु भी, पौलुस कहता है, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु भी, अपने लोगों को छुड़ाने और उन्हें अपने और एक दूसरे के साथ एक करने के लिए।

मसीह के अवतार में, परमेश्वर वास करता है, दोहरा अर्थ यूहन्ना 1, 14, शब्द देहधारी हुआ और हमारे बीच वास किया। स्केनाओ का अर्थ है वास करना। इसका अर्थ निवास करना भी है।

यूहन्ना दोहरा अर्थ इस्तेमाल कर रहा है। मसीह के अवतार में, परमेश्वर वास करता है, वह अपने लोगों के बीच निवास करता है, उसकी महिमा मसीह के शरीर से छिपी हुई है, और फिर भी यह हमारे प्रभु के रूपांतरण में प्रकट होती है। मसीह के अवतार में, परमेश्वर अपने लोगों के साथ वास करता है और हमेशा उनके साथ रहने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

मैथ्यू के सुसमाचार के अंत में यीशु के शब्दों की तुलना महान आदेश से करें, और देखें, मैं युग के अंत तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। जब मसीह पित्तोकुस्त के दिन आत्मा को नए नियम के विश्वासियों के साथ रहने और उन्हें अपने साथ जोड़ने के लिए भेजता है, तो वह उन्हें यह पहचान देता है। वे परमेश्वर के लोगों के रूप में मसीह में हैं।

मैं फिर से कहूँगा, हम यह दावा नहीं कर रहे हैं कि पुराना नियम मसीह के साथ एकता सिखाता है। हम यह दावा कर रहे हैं कि यह नींव रखता है, विशेष रूप से इस संबंध में, पहचान के साथ, परमेश्वर की वाचागत उपस्थिति, उसे उनके परमेश्वर के रूप में और उन्हें उनके लोगों के रूप में पहचानना, जो कि नींव है। यह उस पृष्ठभूमि का एक हिस्सा है जिसके विरुद्ध हमें पुत्र के अवतार में मसीह के साथ एकता और पित्तोकुस्त पर आत्मा को उंडेलने को समझना है।

वे चीजें शून्य में नहीं आती हैं। वे ट्रेन में आती हैं, बाइबिल के विशेष प्रकाशन का खुलासा करने वाला नाटक, और इसकी जड़ें पुराने नियम में हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, हम तीन पहलुओं या चित्रों में से दूसरे को लेंगे, जो परमेश्वर के वाचाबद्ध लोगों में शामिल होना और सदस्यता है।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 5 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, पुराने नियम की पहचान।